International Journal of Applied Research 2022; 8(12): 208-210

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2022; 8(12): 208-210
www.allresearchjournal.com
Received: 10-10-2022
Accepted: 16-11-2022

डॉ. संध्या गौतम
एसोसिएट प्रोफेसर, आर्य गर्ल्ज कॉलेज, अम्बाला छावनी, हरियाणा, भारत

Corresponding Author:
डॉ. संध्या गौतम
एसोसिएट प्रोफेसर, आर्य गर्ल्ज कॉलेज, अम्बाला छावनी, हरियाणा, भारत

मैं द्रोपदी नहीं हूँ, कहानी संग्रह की समीक्षा

डॉ. संध्या गौतम

प्रस्तावना

डॉ. ज्ञानी देवी द्वारा रचित कहानी संग्रह ''मैं द्रोपदी नहीं हूँ' नारी के विविध आयामों को प्रस्तुत करता है। इस संग्रह में बाइस कहानियाँ हैं। प्रत्येक कहानी नारी जीवन के यथार्थ को प्रस्तुत करती हैं। इस संग्रह की सर्वप्रथम कहानी ''मैं द्रोपदी नहीं हूँ'' में लेखिका ने एक कला प्रेमी के माध्यम से हिमाचल के प्राकृतिक सौन्दर्य के साथ–साथ श्रेष्ठा के अप्रतिम सौन्दर्य का बखूबी चित्रण किया है। जो पढ़ना चाहती है, लेकिन गरीबी के वशीभूत बकरियां चराती है। उसकी माँ अपनी बेटी को देख भगवान से प्रार्थना करती है 'हे भगवान धी न देना किसी को धी दे तो धन जरूर देना, वरना बेटी को जन्मते ही सम्भाल लेना।' बाप विवाह के नाम पर 30 हजार में अपनी बेटी को बेच देता है। विवाह के बाद दूसरी रात जब कोई अन्य पुरूष उसके पास आता है, तो वह उसका विरोध करती है, तब वह कहता है कल तुम्हारे पास तीसरा आएगा, परसों चौथा व नरसों पांचवाँ, वह अकेला थोड़ा तुम्हारा पति है? हम पाँचों ने मिलकर तुम्हें खरीदा है, यह कुरूक्षेत्र भूमि है। यहाँ द्रोपदी जैसी राजकुमारी के भी पाँच–पाँच पति थे , तुम्हारी तुम्हारी औकात ही क्या है।श्रेष्ठा द्रोपदी नहीं बनना चाहती, इसलिए वह वहाँ से भाग जाती है। वह सोचती है, नारी हर बार द्रोपदी बनकर सामाजिक असंगति की त्रासदी को क्यूँ झेले।

'चिट्ठी' कहानी में लेखिका ने गरीबी में सुन्दर बेटियों की सुरक्षा का प्रश्न उठाया है। गरीब माता–पिता की सुन्दर बेटियाँ हो तो घर का बंद दरवाजा ही सजग प्रहरी का काम करता है। सुन्दरता की प्रतिमा राजबाला जिसका पति मिलिट्री की नौकरी करता है, उसे चिट्ठी लिखता है लेकिन अनपढ़ होने के कारण वह पढ़ नहीं पाती है, उसे पहली बार अपनी विवशता पर रोना आया, क्योंकि कोई भी उसे चिट्ठी सुनाने वाला नहीं मिला। इस कहानी में युवा पत्नी की भावुकता सब कुछ जान लेने की चाह और विवशता का बखूबी चित्रण किया गया है।

'गुरू दक्षिणा' कहानी में लेखिका ने दिखाया है कि बुढ़ापा और अनपढ़ता दोनों व्यक्ति को असहाय जीवन जीने के लिए विवश कर देते हैं। इस कहानी में मीना अपनी माँ को प्रौढ़ शिक्षा का महत्त्व बताती है तो माँ कहती है ''इस उमर में पढ़ाकर क्या मास्टरनी बनावेगी मनै।'' मीना किसी तरह समझा बुझाकर अपनी माँ को एक दस तक अंकों की पहचान करवाती है। एक दिन वह असहाय माँ जब अपनी बेटी को टेलीफोन स्वयं मिलाती है तो उसे लगता है कि आज उसे गुरू दक्षिणा मिल गई। मीना को अपने भाई के व्यवहार से लगता है कि आर्थिक रूप से सम्पन्न परिवार जो आज की सभ्यता के रंग में रंग कर सभ्य तो कहलाने लगे, लेकिन भावात्मक स्तर पर निरन्तर गिरते जा रहे हैं। वे अपने बच्चों की महंगी माँग तो पूरी कर सकते हैं लेकिन बुजुर्ग माँ बाप का खर्चा उठाना उन्हें कठिन लगता है।

'काश' कहानी में कन्या भ्रूण की पीड़ा को बड़े सशक्त ढंग से वाणी प्रदान की है। हरदम अपनी बात मनवाने वाले पिता जी यहां माँ के निर्णय से कैसे सहमत हो गए थे ? और क्यों हो गए थे ? किसे दोष दूं। जब रक्षक ही भक्षक हो जाए तो फिर किया ही क्या जा सकता है। काश! माँ मैं जिन्दा होती, मैं तेरे तमाम आँसू पोंछ लेती।

'रेत का घरौंदा' कहानी में ग्रामीण पृष्ठभूमि के युवक और युवती के प्रेम की दर्शाया है जो समाज की अनुमति के बिना अपना घरौंदा बनाने में सफल तो होते हैं, लेकिन शीघ्र ही समाज की मान्यताएं उन्हें जीने नहीं देती। समाज की बही में लिखे खाते, यमराज के दूत भी नहीं मिटा सकते फिर आदमी की तो क्या औकात है। निशा अपने पिता और परिवार का व्यवहार देखकर सोचती है, क्या सामाजिक प्रतिष्ठा ममत्त्व से बड़ी हो जाती है ?

क्या माफी सिर्फ मर्द को मिल सकती है ? कहानी के अन्त में निशा का पिता ही उसे सल्फास की गोलियाँ देकर संवेदनहीन होने का परिचय देता है। अखबार में निशा के मरने की खबर पढ़कर प्रेम को लगा कि जैसे उसकी आँखों के सामने ही उसके रेत का घरौंदा टूटकर बिखर गया और वह स्वयं भी निशा के पास पहुँच गया।

'धरती गोल है' कहानी में लेखिका ने घर–घर की कहानी का चित्रण किया है कि आज परिवार केवल पति पत्नी और बच्चों तक ही सीमित रह गए हैं। यदि माता–पिता, भाई–बहन आकर रहने लगे तो उन्हें भार सदृश लगते हैं। श्रीमती मलिक अपने सास के आने की खबर पर ही घर छोड़कर अपने भाई के घर चली जाती है और वहाँ अपनी माँ और बहन को बुलाकर छुट्टियों के दस दिन रहती है, परन्तु छुट्टियों में दस दिन अपनी सास का आना उसे अच्छा नहीं लगता। अब भाई उसे वापस उसके घर छोड़ कर आता है तो सोचता है कि हर घर की कहानी यही कहानी है, सारी धरती गोल है।

'ग्रहण की छाया' कहानी में मेजर सुबे सिंह के माध्यम से लेखिका ने भारत में आदर्श गाँवों की परिकल्पना को साकार करने की प्रेरणा दी। जब तक भारत के गाँवों का विकास नहीं होगा, तब तक भारत का विकास संभव नहीं। बिना सरकारी प्रयासों के मेजर सुबे सिंह गाँव के सभी जाति, धर्म के लोगों को साथ लेकर अपने गाँव को एक आदर्श गाँव बनाने में सफल होते हैं।

'निर्णय' कहानी की रामदेई अपने निर्णय द्वारा ही एक स्वतंत्र तथा अच्छा जीवन जीने में सफल होती है। अन्यथा विवाह करने पर उसे जो पति मिलता है, वह उसे पहली रात ही कहता है – ''मेरी भाभी के संग मेरा जिस्मानी रिश्ता है। तेरे साथ शादी होने पर भी यह रिश्ता जारी रहेगा। तुम्हें अपनी जुबान व दिमाग दोनों बंद रखने हैं। मारता–पिटता जुल्म सहते वक्त बीतता रहेगा।'' 18 वर्ष की उमर में वापिस मायके आ जाती है। दोबारा विवाह होने पर वह मृत पुत्र पैदा होने के कारण ससुराल वालों द्वारा वापिस मायके भेज दी जाती है, लेकिन पति की मृत्यु के पश्चात् स्वयं पंचायत के सामने निर्णय देती है कि मैं इसी गाँव की बेटी बनकर रहूंगी और अंततः वह सबका दिल जीत लेने में सफल होती है। यह कहानी नारी की सुप्त चेतना को जागृत करने वाली कहानी है। क्योंकि आज निर्णय की जो शक्ति पुरूष के पास है, यदि यह शक्ति स्वयं हासिल कर लेती है तो वह अपने नारकीय जीवन को स्वर्गिक बना सकती है।

'विश्वास' कहानी में 75 वर्षीय मानव के माध्यम से बताया है कि बड़ी से बड़ी बीमारी को जीतने के लिए दवाई के साथ–साथ आस्था, विश्वास और सेवा भी अनिवार्य है। किसी पर गहरा विश्वास ही सोच को बदल देता है और उसके सकारात्मक परिणाम नजर आने लगते हैं। मानव का अपनी पुत्री और दामाद पर अटूट विश्वास ही उसे मृत्यु के मुंह से बचा लेता है।

'अहसास' कहानी में बिल्लो के माध्यम से लड़की के लिए मायके का महत्त्व और उसका अहसास चित्रित किया गया है। माँ के बिना मायका कैसा लगता है, इस दुःख की व्यथा की अभिव्यक्ति इस कहानी में की गई है।

'आशीर्वाद' कहानी आज के सभ्यपन में आत्मकेन्द्रित होते समाज की स्थिति का चित्रण करती है। प्राध्यापिका आलोकिता अपने सभ्यपन में आत्मकेन्द्रित हो गई है। इस बात का अहसास उसकी पड़ोसिन करवाती है। आपके घर में कोई खुशी, गमी हो और पड़ोस में पता ही न हो। मिसिज चौधरी की बेबाकी सरलता कैसे उसमें रस भर जाती है और वह सोचती है, जब जागो तभी सवेरा और अपने आपको वास्तव में आलोकिता बनाने का संकल्प लेती है। हम सोचते हैं कि शहरों में कोई किसी से बोलना नहीं चाहता, ऐसा नहीं है। हम स्वयं अपने दायरों में अपने आप को कैद कर लेते हैं, आवश्यकता है, उनसे बाहर आने की, भाईचारा बनाने की।

'पदचिन्हों की मिट्टी' कहानी में नारी के प्रति समाज की सोच को चित्रित किया गया है। घर में काम करने वाली नौकरानी शोभा जो स्वयं कमाती है और खाती है, वह ही बड़े घर की बहू के लिए प्रेरणा स्रोत बनी जिसके पदचिन्हों की मिट्टी उठाकर उसने अपने मस्तक पर लगा ली और कहा कि मैंने भी इससे स्वाभिमानपूर्वक जीने का नुस्खा सीख लिया है।

'तलाश' कहानी में दिखाया गया है कि ऊपर से सुखी दिखाई देने वाले लोगों के हृदय के तार यदि छेड़ दिए जाए तो कितनी दुखभरी कथाएं मिलती हैं। प्रज्ञा जब ताई से उसके दुःख का कारण पूछती है तब पता चलता है कि ताई ने किस प्रकार अपनी सौतेली माँ के अत्याचार सहे, छोटी उम्र में उसका विवाह कर दिया गया। गरीब, शराबी और कमजोर पति चार बच्चे गोद में डाल चल बसा। बच्चों से भी कोई सुख न मिल सका। तो इस इंस्पेक्टर साहब ने सहारा दिया, आज ये भी उसे कहीं भे चले जाने को कहते हैं। तब प्रज्ञा सोचती है, कितनी बार टूट–टूट कर जुड़ना, जुड़कर, फिर टूट कर बिखरना, नारी की नियति आखिर कब तक रहेगी ? कहीं वह घर होगा जहां उसकी हकूमत होगी। कब उसे बन्जारों की जिन्दगी से मुक्ति मिलेगी। कब पूरी होगी आखिर उसकी तलाश ?

'गुनहगार' एक बच्चे की कहानी है जो आत्मपीड़ा का शिकार है, इसका कारण है, सौतेली माँ और पिता का कठोर व्यवहार। उसे नानी ने बताया था कि सौतेली माँ को कच्चे चून की भी बुरी होती है, असली कितनी बुरी होगी, इसकी कल्पना करके ही हम काँप जाते थे। मुझे पिता नई माँ और भाई सब दुश्मन दिखाई देते थे। मुझे कोई भी स्थान सुरक्षित दिखाई नहीं देता था। मेरी सच बातों पर भी किसी को विश्वास नहीं होता था। मैं बेकसूर होते हुए भी पिता की नजरों में माँ की मौत का असली गुनहगार था। बेकसूर होते हुए भी अपना गुनाह कबूलने के सिवाय मेरे पास कोई रास्ता नहीं था। अब मुझे सच बोलने से भी नफरत हो गई, जिसे सच बोलने पर घर में भी सजा और अदालत में भी सजा ही मिली हो, उसके सच से तुम मेरी क्या मदद कर सकते हो।

'कुम्भीपाक' कहानी में दर्शाया है कि बिना माँ के बेटी अपने ही घर में सुरक्षित नहीं है। पुत्र की प्राप्ति की इच्छा ने कालिया को चार पुत्रियों का बाप बना दिया और शान्ति को खो दिया। परिणामस्वरूप 10 साल की निशा के कंधों पर सारी जिम्मेदारी आ गई। छोटी बहनों का पालन–पोषण, खेती और घर का काम उसके कोमल कंधों पर आ गया। निशा धीरे–धीरे बड़ी हो रही है और शारीरिक परिवर्तन भी उसे तंग करने लगे। पिता शराबी हो गया, वह दिन भर कोल्हू का बैल बनी रहती और रात को घोड़े बेच कर सो जाती। यौवन में पैर रखते ही निशा बाप की वासना का शिकार बनती है, जब वह अपने गर्भ के विषय में पिता को बताती है तो वह बोला खबरदार किसी के सामने जुबान भी खोली तो मेरा नाम भी तेरी जुबान पर आया तो तेरी गर्दन काट दूंगा। वैसे भी गाँव वो सभी यही जानते हैं कि तू नौकर के साथ मुँह काला करती है। बाड़ ही अगर खेत को खाने लगे तो उसकी सुरक्षा कौन करेगा। वह बताना चाहती थी कि औरत इज्जत के लिए जान भी दे सकती है। उसने अपने आपको आग के हवाले कर दिया। न जाने कितनी निशाओं के पेट में कुंभीपाक पलते हैं।

'टूटा सितारा' कहानी में अपूर्वा और उसके दादा के माध्यम से दिखाया है कि बुजुर्गों की उपस्थिति आने वाली पीढ़ियों पर अपने गरिमामय व्यक्तित्व और व्यवहार का किस प्रकार प्रभाव डालती हैं। अपूर्वा बड़ी होकर दादा के बारे में सोचती है। कभी व्यावहारिक जीवन में ईमानदारी, सच्चाई एवं मेहनत की अहमियत पर जोर डाल कर अपनाने की सलाह देते तो कभी कोई मनोरंजक किस्सा, घटना सुनाकर हंसाते। हमारे लिए खबरों का, मनोरंजन का आध्यात्मिक ज्ञान का यानि हर क्षेत्र की जानकारी देने वाला एकमात्र यही सशक्त जरिया होते थे। दादा के शरीर से हमें एक ऐसी महक आती तो तमाम भय और असुरक्षा को पल में मिटाने की शक्ति रखती थी। संसार में इससे महफूज जगह कोई नहीं है। हर जरूरत का पल में निवारण कर देते। उन्होंने मुझे समझाया आत्मसम्मान भी कोई चीज होती है। पत्थर पड़े ऐसी पढ़ाई पर जो गलत को गलत भी न कहे। कोरे भाषणबाजी से संस्कार नहीं पनप सकते। पूर्वजों द्वारा व्यवहारिक जीवन में अपनाई गई बातें ही चुपचाप जीवन का अंग बन जाती हैं।

''आत्मा की आत्मकथा'' कहानी में पशुओं के प्रति समाज की संवेदनशून्यता तथा बच्चों की कोमल भावनाओं को अभिव्यक्ति मिली है। ''मुखराग्नि'' कहानी में मंगला अपने बेटे को बड़े स्कूल में पढ़ाकर बड़ा आदमी बनाना चाहती है, लेकिन बच्चे में प्रतिभा होते हुए भी पैसे के अभाव में वह उसका दाखिला नहीं करवा पाती। शाम को उसे अपने पति से पता चलता है कि सिंघला साहब का हृदय गति रूकने से देहान्त हो गया। तो उनके बेटी को मुखराग्नि के लिए फोन किया गया तो उसे बड़े आदमी ने कहा कि मैं अभी व्यस्त हूँ, दो तीन दिन तक लाश को रखा नहीं जा सकता तो प्लीज अंकल आप लोग ही दाह संस्कार, दो चार दिन में माँ को मैं आकर संभाल लूंगा। इस घटना का अहसास कर मंगला का पति कहने लगा मैं अपने बेटी को कभी बड़ा आदमी नहीं बनाऊंगा कि हमारी आंहें भी उस तक न पहुँच सके। मुझे नहीं बनना, इतने बड़े बेटे का पिता जिसके होते हुए पिता को

मुखराग्नि भी कोई ओर दे। यह कहानी संवेदनहीन होते समाज का चित्रण करती है।

'कहाँ गई वो खुशबू'' कहानी में भारतीय समाज में पुत्र प्राप्ति को उजागर किया गया है। गरीब छिप्पू पुत्र प्राप्ति की इन्तजार में नौ लड़कियों का बाप बन जाता है। उसकी पत्नी को अपनी जान से हाथ धोना पड़ता है। पत्नी की मृत्यु के पश्चात् भी वह उन लड़कियों से स्वार्थ साधना चाहता है। अपने बराबर की उम्र के व्यक्ति को विवाह के नाम पर अपनी लड़की को बेच देता है और गीता को गुरू रूप में मानता हुआ कहता है– ''जो हुआ अच्छा हुआ, जो होगा अच्छा होगा।'' उसकी युवा लड़की विवाह के पश्चात् भागकर अपनी जान दे देती है। उसकी सहेली आत्मग्लानि से भरी सोचती है– कहाँ गई वो खूशबू जिसे वो बचा न सकी।''

''साधना'' एक ऐसी लड़की की कहानी है जो प्रतिभा और सौन्दर्य का समन्वय है। जो अपनी मैडम को बताती है, साधना बने रहने के लिए कितने संयम, कितने त्याग व कितने धैर्य की जरूरत पड़ती है, कदम–कदम पर मुझे परीक्षा देनी पड़ती है। मेरी प्रतिभा मेरी योग्यता, मेरे गुण, सौन्दर्य सब कुछ तो मेरे अवगुण बन गए हैं। मुझसे कम पढ़े–लिखे लड़के भी मेरे चरित्र का निरीक्षण–परीक्षण करते हैं। मैं पढ़ना चाहती हूँ, माता–पिता इसलिए नहीं पढ़ाना चाहते क्योंकि इतने पढ़े–लिखे लड़के नहीं मिलते– शादी ही तो आखिरी मंजिल नहीं है न मैम। मैं सचमुच साधना करना चाहती हूँ। क्यों लड़की को वस्तु समझा जाता है। मुझे नहीं करनी ऐसे लड़कों से शादी जो मुझ पर इसलिए शक करे कि मैं पढ़ी–लिखी हूँ और सुन्दर हूँ, कॉलेज में पढ़ती हूँ। मेरी इस बात को बिरादरी में नाक कटाना समझा जा रहा है तो मैं उनके लिए अपनी जिन्दगी कैसे बर्बाद करूँ।

इस संग्रह की सभी कहानियाँ जीवन के यथार्थ को प्रस्तुत करती हैं। इनमें आज के भौतिकवादी युग में कम होती संवेदनशीलता, प्रेम का अभाव, अशिक्षा, गरीबी, अनमेल विवाह, बाल विवाह, भ्रूण हत्या आदि समस्याओं का चित्रण किया गया है। नारी जीवन के विविध पक्षों को उद्घाटित करती इन कहानियों से संकेत मिलता है कि आज यदि नारी को आर्थिक स्वतंत्रता मिली है, तो कहीं उससे उसकी भावात्मक सुरक्षा छीनी जा रही है। भाषा में अंग्रेजी और हरियाणवी शब्दों का भरसक प्रयोग किया गया है। मुहावरों और लोकोक्तियों के प्रयोग ने भाषा को सशक्त बनाया है।

सन्दर्भ

1. देवी ज्ञानी, मैं द्रोपदी नहीं हूँ, (कहानी संग्रह), गाजियाबाद, लता साहित्य सदन, 2008